मध्यप्रदेश शासन

प्रशासनिक प्रतिवेदन

नर्मदा घाटी विकास विभाग

वर्ष 2010-2011

महेश्वर में नर्मदा का सौंदर्य

मध्यप्रदेश माध्यम
www.mpmadhyam.in, E-mail : mpmdtp@yahoo.com

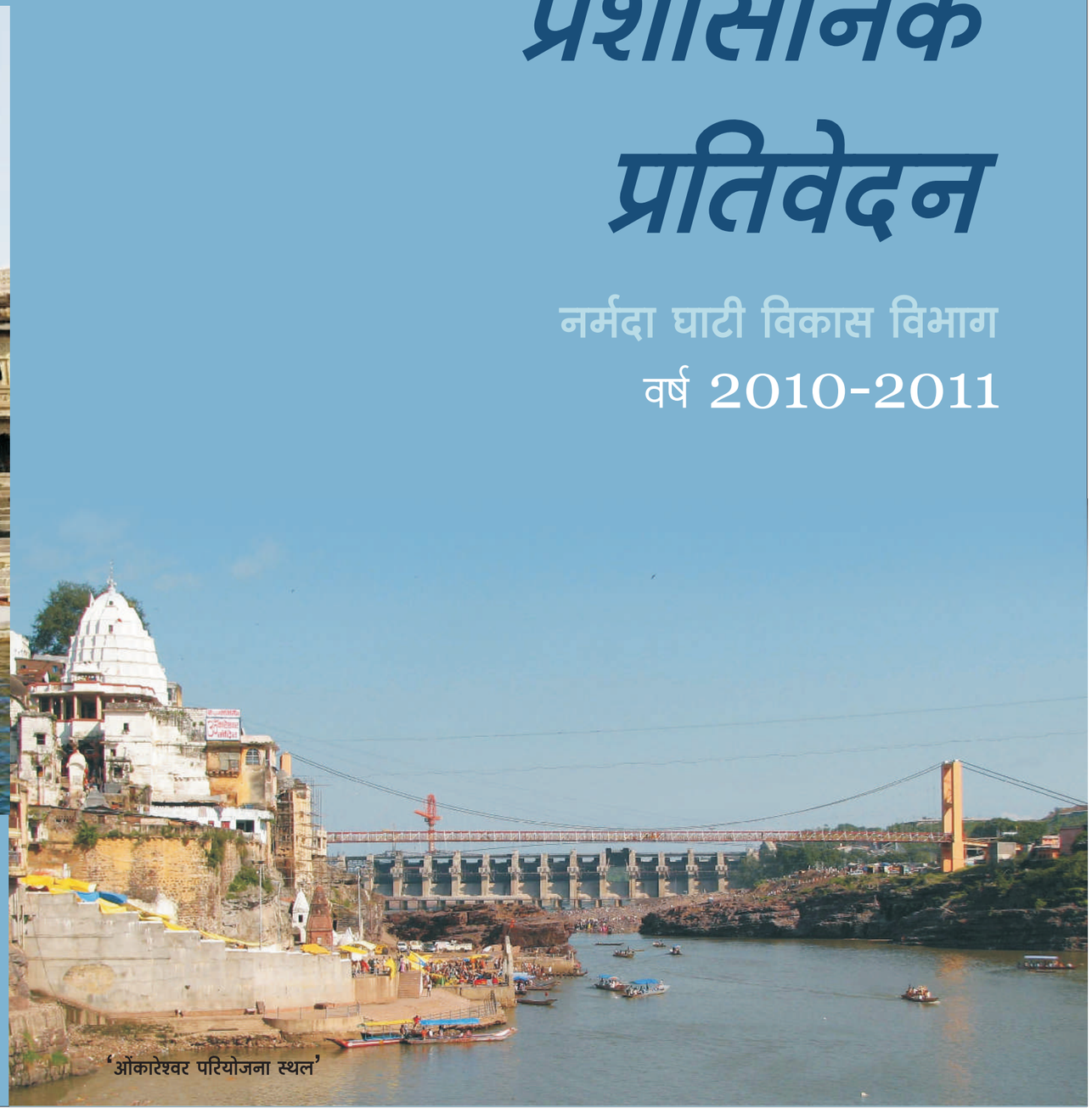

'ओंकारेश्वर परियोजना स्थल'

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान नर्मदा भवन सभागार में नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के अभियंताओं को मार्गदर्शन देते हुए। साथ में प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री के.एल. अग्रवाल, प्रदेश के मुख्य सचिव श्री अवनि वैश्य, प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री ओ.पी. रावत।

मान की कहानी कृषकों की जुबानी

नर्मदा की सहायक नदी मान पर निर्मित मान सिंचाई परियोजना ने धार जिले के आदिवासी अंचल में खेती-किसानी की तस्वीर बदल दी है। परियोजना से इस आदिवासी बहुल क्षेत्र में 15 हजार हैक्टेयर में सिंचाई हो रही है। किसान बदहाली से खुशहाली के युग में प्रवेश कर रहे हैं, यह बात सामने आई 'कृषक जगत' समाचार पत्र द्वारा अंचल के किसानों से रूबरू चर्चा में। इस चर्चा के कुछ अंश –

श्री नत्थूसिंह उपभोक्ता समिति ग्राम पानवा के अध्यक्ष बताते हैं कि इनके क्षेत्र में सोलह सौ हैक्टेयर फसल सिंचित डेम के पानी से की जा रही है। गंभीर पेयजल की स्थिति से ग्राम की महिलाओं को छुटकारा मिला है पहले 2 से 3 कि.मी. दूरी से पीने का पानी लाना पड़ता था किंतु आज ग्राम में ही पेयजल सुविधा मिल जाती है।

गंधवानी के कृषक **श्री शिवपाल आर्य** बताते हैं कि अब तीन फसलों का उत्पादन लेते हैं। पहले एक फसल भी लेना मुश्किल होता था पानी होने से रोजगार से भी युवक जुड़े हैं। बेरोजगारी घटी है कृषकों की गलत आदतों में सुधार हुआ है।

गंधवानी जनपद पंचायत अध्यक्ष **श्रीमती रायकूबाई** बताती हैं कि इनके जनपद के लगभग 40 ग्रामों की कृषि भूमि सिंचित होती है श्रीमती रायकूबाई ने नर्मदा घाटी विभाग से छोटी नहरों से नाली बनाकर (आउट लेट फील्ड चेनल) दूर तक स्थित खेतों पर पानी पहुंचाने की मांग की है।

ग्राम खड़की के कृषक **श्री ध्यान सिंह मुवेल** बताते हैं कि पहले ग्राम का जलस्तर 30 फीट था अब 5 फीट पर पानी उपलब्ध हो जाता है। कच्ची नहरों को पक्की नहरों में परिवर्तित करने की सलाह भी इन्होंने दी जिससे की रिसाव रुकेगा एवं अंतिम छोर तक नहर का पानी पहुंचेगा।

अवल्दा मान जल उपभोक्ता समिति के अध्यक्ष **श्री भुवन सिंह मंडलोई** ने बताया कि ग्राम का ग्यारह सौ हैक्टेयर क्षेत्र मान से सिंचित हो रहा है। योजना से पहले ग्राम के कृषक मजदूरी करने अन्य राज्यों में जाते थे किंतु अब अन्य जिले के कृषक ग्राम में मजदूरी करने आते हैं ऐसी ही स्थिति पशु आहार की है पहले पशु आहार कृषक अन्य स्थानों से खरीदते थे किंतु अब गेहूं का भूसा बाहर बेचा जाता है।